REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 9 | ISSUE - 10 | JULY - 2020

''भारतीय अर्थव्यवस्था में वित्तीय प्रणाली का महत्व''

डॉ.राजू रैदास
शोधार्थी – डी–लिट (वाणिज्य),अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,
रीवा (म०प्र०) भारत.

परिचय – Introduction :- भारतीय वित्तीय प्रणाली :–

किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास में विभिन्न आर्थिक इकाइयों, मोटे तौर पर निगमित क्षेत्र, सरकार और घरेलू क्षेत्र में वर्गीकृत की प्रगति द्वारा परिलक्षित होता है। उनकी गतिविधियों के प्रदर्शन करते समय इन इकाइयों एक अधिशेष / घाटा / संतुलित बजट स्थितियों में रखा जाएगा। क्षेत्रों या लोग अधिशेष निधियों के साथ कर रहे हैं और वहाँ उन के घाटे के साथ कर रहे हैं। एक वित्तीय प्रणालीया वित्तीय क्षेत्र एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है और घाटे के क्षेत्रों के लिए अधिशेष के क्षेत्रों से धन के प्रवाह की सुविधा। एक वित्तीय प्रणाली विभिन्न संस्थानों, बाजारों, विनियमों और कानूनों, प्रथाओं, पैसे प्रबंधक, विश्लेषकों, लेन–देन और दावों और देयताओं की संरचना है।

किसी भी देश की वित्तीय प्रणाली वित्तीय बाजार, वित्तीय मध्यस्थता और वित्तीय साधनों या वित्तीय उत्पादों के होते हैं। यह पत्र वित्त और भारतीय वित्तीय प्रणाली और वित्तीय बाजार, वित्तीय मध्यस्थों और वित्तीय साधनों पर ध्यान केंद्रित का अर्थ पर चर्चा करता है। विभिन्न मुद्रा बाजारलिखतों पर संक्षिप्त समीक्षा भी इस अध्ययन में शामिल रहे हैं।

शब्द 'वित्त' हमारी साधारण समझ में यह समकक्ष 'मनी' के रूप में माना जाता है। हम पैसे और अर्थशास्त्र में बैंकिंग के बारे में, मौद्रिक सिद्धांत और व्यवहार के बारे में और 'सार्वजनिक वित्त' के बारे में पढ़ें। लेकिन वित्त बिल्कुल पैसे नहीं है, यह एक विशेष गतिविधि के लिए धन उपलब्ध कराने का स्रोत है। इस प्रकार सार्वजनिक वित्त सरकार के साथ पैसे मतलब यह नहीं है, लेकिन यह एक सरकार के कार्यों और गतिविधियों के लिए राजस्व बढ़ाने के स्रोतों को संदर्भित करता है। यहाँ कुछ शब्द की परिभाषा का दोनों एक स्रोत के रूप में और के रूप में एक गतिविधि के एक संज्ञा और एक क्रिया के रूप में यानी वित्त'।

वित्तीय बाजार :–

एक वित्तीय बाजार में जो वित्तीय आस्तियों बनाया स्थानांतरित किया या कर रहे हैं बाजार के रूपमें परिभाषित किया जा सकता। असली माल या सेवाओं के लिए पैसे का आदान–प्रदान शामिल हैकि एक वास्तविक लेन–देन हुई, एक वित्तीय लेनदेन के निर्माण या एक वित्तीय परिसंपत्ति काअंतरण शामिल है। वित्तीय संपत्ति या वित्तीय साधनों धन की राशि का भुगतान भविष्य में कुछ समय और ब्याज या लाभांश के रूप में या आवधिक भुगतान के लिए एक दावे का प्रतिनिधित्वकरता है।

मुद्रा बाजार :–

मुद्रा बाजार अगर एक थोक ऋण बाजार के लिए कम जोखिम, उच्च तरल, अल्पकालिक साधन। धन एक साल तक एक ही दिन से लेकर समय के लिए इस बाजार में उपलब्ध हैं। ज्यादातर सरकार, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं द्वारा इस बाजार का प्रभुत्व है। पूंजी बाजार – पूंजी बाजार लंबी अवधि के निवेश वित्त करने के लिए डिजाइन किया गया है। इस बाजार में हो रही लेन–देन अवधि के लिए एक वर्ष से अधिक हो जाएगा।

पूंजी बाजार :–

पूंजी बाजार में लंबी अवधि के निवेश के वित्तपोषण के लिए बनाया गया है। लेन–देन के इस बाजार में जगह लेने के एक वर्ष से अधिक अवधि के लिए किया जाएगा।

विदेशी मुद्रा बाजार :–

विदेशी मुद्रा बाजार बहु मुद्रा आवश्यकताओं, जो मुद्राओं के विनिमय से मुलाकात कर रहे हैं के साथ सौदों। विनिमय दर के आधार पर लागू होता है, धन के हस्तांतरण इस बाजार में जगह लेता है। यह दुनिया भर में सबसे अधिक विकसित और एकीकृत बाजार में से एक है।

क्रेडिट बाजार :–

क्रेडिट बाजार जहां बैंकों, वित्तीय संस्थाओं और एन बी एफ सी प्रबंध करना लघु, मध्यम और कार्पोरेट के लिए दीर्घकालीन ऋण और व्यक्तियों एक जगह है।

वित्तीय प्रणाली की महत्व (Importance of financial system) :–

फण्ड्स तरलता प्रदान करना :– वित्तीय प्रणाली द्वारा सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को तरलता प्रदान की जाती है और इसके लिए फण्ड्स को एकत्र कर उन्हें उन्हें उपयोगकर्ताओं को प्रदान करने की क्रिया की जाती है।
बचत प्रसार :– वित्तीय तंत्र द्वारा बचत को निवेश में बदला जाता है और अतिरिक्त धन को उसके धारकों से लेकर आवश्यकता संबंधी पक्षों तक पहुंचाया जाता है।
धन प्रदान करना :– वित्तीय तंत्र द्वारा सही प्रकल्पों का चुनाव किया जाता है उससे धन को सही प्रदर्शन करने वाले स्थानो पर लगाया जा सके।
वस्तु व सेवा के बदले भुगतान का प्रणाली :– इसे विविध प्रतिभूतियों के माध्यम से किया जाता है और इसमें एलेक्ट्रोनिक भुगतान प्रणाली का उपयोग किया जाता है।
जोखिम प्रबंधन :– यह प्रणाली बचत को सही प्रकार से फण्ड्स के वितरण में लाकर प्रसार हेतु मदद करता है।
जानकारी व विस्तार को जानना, साही करना और समय पर जानकारी देना :– साही निर्णय लेने के लिए पारदर्शिता होना आवश्यक है और यह वित्तीय प्रणाली द्वारा ही दी जाती है।

वित्तीय प्रणाली के कार्य (Financial system functions):–

किसी वित्तीय तंत्र की भूमिका किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण होती है। अर्थव्यवस्था साही तरीके से चल सके, इस हेतु साही वित्तीय प्रणाली होना आवश्यक है :–

फण्ड्स को तरलता प्रदान करना :–

इसका प्रमुख कार्य है फण्ड्स को धन के रूप में प्रयोजन में रखना और इन्हे अर्थव्यवस्था के लिए साही संपत्ति के रूप में रखना। वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन के लिए यह आवश्यक है। वित्तीय प्रणाली द्वारा सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को तरलता प्रदान की जाती है जिससे वे अपने कार्य कर सके। जैसा की पहले बताया गया है, इसे फण्ड्स को प्राप्त कर उपयोगकर्ताओं को देने की प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है। उदाहरण के लिए बैंक, बीमा कंपनी आदि द्वारा बड़े उद्धयोगों को अपने विस्तार या ढांचागत विकास के लिए धन प्रदान किया जाता है। उसी प्रकार ब्रोकिंग संस्थान द्वारा कंपनी के लिए नवीन प्रकार की मदद जारी की जाती है जिससे उन्हे साही प्रतिभूति जारी करने में मदद मिलती है।

बचत प्रसार :–

वित्तीय प्रणाली द्वारा हो महत्वपूर्ण कार्य किया जाता है वह है बचत के प्रसार को छोटे बचतकर्ताओं व बड़े बचतकर्ताओं तक लाना। इस वित्तीय प्रणाली द्वारा ही बचत को निवेश में बदला जाता है। यह प्रणाली इस प्रकार से अधिक धन रखने वाले और अधिक धन चाहने वालों का अंतर कम करता है। एक बाद फिर, संस्थानों द्वारा अपने फण्ड्स को बैंक में रखा जाता है। वे बचत, निवेश आदि के द्वारा धन प्राप्त करते हैं और ग्राहकों द्वारा जमा किए गए धन वारा इसका पालन किया जाता है इसके बाद इस धन को कर्ज के रूप में उत्पादन प्रयोजन, व्यक्तिगत स्वरूप और औद्योगिक स्वरूप में दिया जाता है।

फण्ड्स का निर्धारण :–

सही प्रकल्प चुनकर फण्ड्स को सही प्रकार से सही रकम हेतु निर्धारित करने में मदद करता है। यह इस प्रकार के प्रोजेक्ट्स के बारे में समय समय पर समीक्षा करता है जिससे यह पता लगाया जा सके की इस फंड का उपयोग सही प्रयोजन से और सही तरीके से हो रहा है या नहीं।

उदाहरण के लिए, कोई कंपनी बैंक से संपर्क करती है और उसे एक ऋण चाहिए जो की उसके प्लांट और नवीन मशीनरी के लिए है, तब बैंक अधिकारी बापने तकनीकी जानकारी की मदद से उसके प्रस्ताव का आकलन किया जाएगा। वे धन तभी देंगे जब वे प्रकल्प के कार्य प्रकार और उत्पादन के साथ ही आगे आने वाले समय मे लाभ की अपेक्षा को देखते हैं। यहाँ तक की धन प्रदान कर देने के बाद भी बैंक द्वारा समय समय पर यह सुनिश्चित किया जाएगा की फंड का उपयोग सही व प्रस्तावित कारण से ही ग्राहक द्वारा किया जा रहा है।

वस्तु और सेवाओं के आदान प्रदान संबंधी भुगतान का प्रकार :–

इसे प्रदान करने के लिए विविध प्रतिभूतियों का उपयोग किया जाता है साथ ही इलेक्ट्रोनिक भुगतान पद्धति का भी उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कंपनी मुंबई में स्थित है और वह कोच्चि मे स्थित किसी कंपनी की सेवाएँ लेती है, तब बुगटन सीधे इलेक्ट्रोनिक स्थानांतरण के माध्यम से संभव है। इसके साथ ही यह स्त्रोतों को भी विविध स्थानों पर ले जाने में मदद करती है जैसे कंपनी मुंबई में है लेकी उसे सेवा प्रदान करने वाली कंपनी कोच्चि में है।

जोखिम प्रबंधन प्रणाली :–

इसमें बचत का प्रसार किया जाता है व इस धन को वितरण के साथ ही सही तरीके से प्रसारित किया जाता है। जोखिम प्रबंधन से यह सुनिश्चित होता है की निवेशकों द्वारा जिस धन का निवेश किया गया है, वह सुरक्षित है। उपरोक्त उदाहरण जाना पर बैंक यह सुनिश्चित करती है कि कुशलतापूर्वक प्रभावी तरीके से हो। और यह जांच करती है कि जनता द्वारा निवेशित किया जाने वाला धन सुरक्षित रहे।

विस्तारित और सही जानकारी निर्णय लेने हेतु पारदर्शिता एक आवश्यक तत्व है और इसी का उपयोग वित्तीय तंत्र द्वारा दी जाने वाली सुविधा के दौरान किया जाता है। नियामकों का खासकर छोटे निवेशकों का ज्यादा धायन रखा जाता है।

वित्तीय प्रणाली के घटक (Financial system components) :–

वित्तीय संस्थाए :– वित्तीय संस्थान सदस्यों और ग्राहकों के लिए वित्तीय सेवाएं प्रदान करते हैं। इसे वित्तीय मध्यस्थों के रूप में भी कहा जाता है क्योंकि वे बचतकर्ताओं और उधारकर्ताओं के बीच बिचौलियों के रूप में कार्य करते हैं।

बैंक :– बैंक वित्तीय मध्यस्थ हैं जो उधारकर्ताओं को राजस्व उत्पन्न करने और जमा स्वीकार करने के लिए पैसे उधार देते हैं। वे आमतौर पर भारी रूप से विनियमित होते हैं, क्योंकि वे बाजार की स्थिरता और उपभोक्ता संरक्षण प्रदान करते हैं। बैंकों में शामिल हैं :–

1. सार्वजनिक बैंक
2. वाणिज्यिक बैंक
3. केंद्रीय बैंक
4. सहकारी बैंक
5. राज्य–प्रबंधित सहकारी बैंक
6. राज्य–प्रबंधित भूमि विकास बैंक

गैर–बैंक वित्तीय संस्थान :– गैर–बैंक वित्तीय संस्थान निवेश, जोखिम पूलिंग और बाजार दलाली जैसी वित्तीय सेवाओं की सुविधा प्रदान करते हैं। उनके पास आम तौर पर पूर्ण बैंकिंग लाइसेंस नहीं होते हैं। गैर–बैंक वित्तीय संस्थानों में शामिल हैं :–

1. वित्त और ऋण कंपनियां
2. बीमा कंपनियां
3. म्यूचुअल फंड्स
4. कमोडिटी के व्यापारी

वित्तीय बाजार :– वित्तीय बाजार ऐसे बाजार हैं जिनमें प्रतिभूतियों, वस्तुओं और फफूंद वाले वस्तुओं की आपूर्ति और मांग का प्रतिनिधित्व करते हुए कीमतों पर कारोबार किया जाता है। "बाजार" शब्द का अर्थ आम तौर पर ऐसी वस्तुओं के संभावित खरीदारों और विक्रेताओं के समग्र आदान–प्रदान का संस्थान है।

प्राथमिक बाजार :– प्राथमिक बाजार (या प्रारंभिक बाजार) आम तौर पर स्टाक, बान्ड या अन्य वित्तीय साधनों के नए मुद्दों को संदर्भित करता है। प्राथमिक बाजार दो खंडों में विभाजित है, मुद्रा बाजार और पूंजी बाजार।

द्वितीयक बाजार :– द्वितीयक बाजार वित्तीय साधनों में लेनदेन को संदर्भित करता है जो पहले जारी किए गए थे।

वित्तीय प्रपत्र :–वित्तीय साधन किसी भी प्रकार की पारंपरिक वित्तीय संपत्ति हैं। उनमें पैसा, एक इकाई में स्वामित्व हित के सबूत और अनुबंध शामिल हैं।

नकद उपकरण :– एक नकद उपकरण मूल्य सीधे बाजारों द्वारा निर्धारित किया जाता है। इनमें प्रतिभूति, ऋण और जमा शामिल हो सकते हैं।

व्युत्पन्न उपकरण :– एक व्युत्पन्न उपकरण एक अनुबंध है जो एक या अधिक अंतर्निहित संस्थाओं (एक परिसंपत्ति, सूचकांक, या ब्याज दर सहित) से इसका मूल्य प्राप्त करता है।

वित्तीय सेवाएं :–वित्तीय सेवाओं को बड़ी संख्या में व्यवसायों द्वारा पेश किया जाता है जो वित्त उद्योग को शामिल करते हैं। इनमें क्रेडिट यूनियन, बैंक, क्रेडिट कार्ड कंपनियां, बीमा कंपनियां, स्टाक ब्रोकरेज और निवेश फंड शामिल हैं।

भारत में वित्तीय नियामक (Financial regulator in India) :–

- भारतीय रिजर्व बैंक
- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड
- फारवर्ड मार्केट कमीशन (एफएमसी)
- बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (इरडा)
- निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम
- प्रवर्तन निदेशालय

वित्तीय प्रणाली के संघटक :–

वित्तीय मध्यस्थता :–

लिखत डिजाइन करने के बाद, जारीकर्ता तो यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इन वित्तीय आस्तियों के क्रम में आवश्यक राशि जुटाने में परम निवेशक तक पहुँचने। फंडों की ऋण लेने वाले वित्तीय बाजार धन जुटाने के लिए दृष्टिकोण, प्रतिभूतियों के मात्र मुद्दा पर्याप्त नहीं होगा। मुद्दा, जारीकर्ता और सुरक्षा की पर्याप्त जानकारी जगह लेने के लिए पर पारित किया जाना चाहिए। वहाँ वित्तीय प्रणाली के भीतर एक उचित चौनल इस तरह के हस्तांतरण सुनिश्चित करने के लिए होना चाहिए। इस उद्देश्य की सेवा करने के लिए, वित्तीय मध्यस्थों अस्तित्व में आया। संगठित क्षेत्र में वित्तीय मध्यस्थता भारतीय रिजर्व बैंक के समग्र निगरानी के तहत कार्य कर संस्थानों की एक **Widerange** द्वारा आयोजित किया जाता है। प्रारंभिक दौर में, मध्यस्थ की भूमिका ज्यादातर ऋणदाता से ऋण लेने के लिए धन के हस्तांतरण सुनिश्चित करने के लिए संबंधित था। इस सेवा के बैंकों, वित्तीय संस्थाओं, दलालों, और डीलरों द्वारा की पेशकश की थी। हालांकि, के रूप में वित्तीय प्रणाली के घटनाक्रम वित्तीय बाजारों में जगह लेने के साथ–साथ चौड़ी हो, अपने परिचालन का दायरा भी चौड़ी हो। आपरेटिंग स्याही वित्तीय बाजारों में शामिल महत्वपूर्ण बिचौलियों से कुछय निवेश बैंकरों, शेयर बाजारों, रजिस्ट्रार, डिपाजिटरी, संरक्षक, पोर्टफोलियो प्रबंधकों, म्युचुअल फंड, वित्तीय विज्ञापनदाताओं वित्तीय सलाहकार, प्राथमिक डीलरों, उपग्रह डीलरों, आत्म नियामक संगठनों, आदि हालांकि बाजारों में अलग कर रहे हैं, वहाँ एक जैसे बाजार की तुलना में इस कदम में अपनी सेवाएं दे कुछ बिचौलियों हो सकता है हामीदार। हालांकि, उनके द्वारा की पेशकश की सेवाओं एक बाजार से दूसरे बदलती हैं।

वित्तीय संस्था :–

वित्त एवं अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में, उन संस्थाओं को वित्तीय संस्थाएँ (**financial institution**) कहते हैं जो अपने ग्राहकों एवं सदस्यों को वित्तीय सेवाएँ (जैसे ग्राहक का धन जमा रखना, ग्राहक को ऋण देना, बैंक ड्राफ्ट देना, निधि अन्तरण आदि) देते हैं। बैंक, भवन–निर्माण सोसायटी, बीमा कम्पनियाँ, पेंशन फण्ड कम्पनियाँ, दलाल संस्थाएँ आदि वित्तीय संस्थाओं के कुछ उदाहरण हैं। किसी भी देश की प्रगति मे वित्तीय संस्थानोँ की अहम भूमिका होती है।

वित्तीय संस्थान बैंकिंग, इंश्योरेंस, म्यूचुअल फंड, शेयर बाजार, गृह ऋण, दूसरे ऋण, क्रेडिट कार्ड के क्षेत्रो मे काम करते है। वित्तीय संस्थानोँ का मुख्य काम देश मे मुद्रा के प्रवाह को नियंत्रित करना होता है।

उद्योग–धन्धों को चलाने मे पूंजी की जरूरत होती है। ये उन्हें वित्तीय संस्थान प्रदान करते है। उद्योग, जनता को रोजगा उपलब्ध कराते है। वित्तीय संस्थानोँ की मदद से आम लोग उद्योगो मे अपनी पूंजी लगा के एक तरफ मुनाफा कमाते है तो दूसरी तरफ देश के विकास मे योगदान देते हैं।

ये संस्थान लोगो को उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिये तरह तरह के ऋण देते है। जैसे घर खरीदने के लिये गृह ऋण, उच्च शिक्षा के लिये शिक्षा ऋण, कार और मोटरसाइकल के लिये आटोमोबाइल ऋण और दूसरी जरूरतोँ के लिये व्यक्तिगत ऋण। बैंकोँ मे लोग बचत खाते खोल के अपना पैसा जमा करते है। इसके अलावा लोग इंश्योरेंस या बीमा मे भी निवेश करते है। शेयर बाजार और म्यूचुअल फंड मे पूंजी निवेश मे भी आजकल वित्तीय संस्थान लोगो के लिये शेयर दलाल की भूमिका अदा करते है।

लोगों से इक्कट्ठा किया हुआ पैसा उद्योगो और देश के विकास मे लगाया जाता है। वित्तीय संस्थान न सिर्फ निजी कम्पनियोँ को बल्कि राज्यो और केन्द्र सरकार को भी तरक्की के कामो के लिये पूंजी मुहैया कराते है।

भारत के प्रमुख वित्तीय संस्थान :–

पिछले वर्षो मे भारत मे वित्तीय संस्थानो ने विकास मे बडी भूमिका निभायी है। भारत के प्रमुख वित्तीय संस्थान निम्न है :–

- भारतीय स्टेट बैंक– ये भारत का सबसे बडा बैंक है
- जीवन बीमा निगम
- यू टी आई
- आइसीआइसीआइ बैंक
- आइसीआइसीआइ डैरेक्ट
- एच डी एफ सी

वित्तीय समावेशन :–

वित्तीय समावेशन (फाइनेंशयल इन्क्लूजन) का मतलब समाज के पिछड़े एवं कम आय वाले लोगों को वित्तीय सेवाएँ प्रदान करना है। इसके साथ ही ये सेवाएँ उन लोगों को वहन करने योग्य मूल्य पर मिलनी चाहिए। कुछ प्रमुख वित्तीय सेवाएं हैं – ऋण, भुगतान और धनप्रेषण सुविधाएं और मुख्यधारा के संस्थागत खिलाड़ियों द्वारा उचित और पारदर्शी ढंग से वहनीय लागत पर बीमा सेवा।

'वित्तीय समावेशन' की चर्चा 2000 के दशक से महत्वपूर्ण स्थान पाने लगी है। आजकल संसार के अधिकांश विकासशील देशों के केन्द्रीय बैंकों के मुख्य लक्ष्यों में वित्तीय समावेशन भी शामिल हो गया है।''वित्तीय समावेशन'' शब्द को 2000 के दशक के आरंभ से महत्त्व मिला है, वित्तीय बहिष्कार की पहचान करने के परिणामस्वरूप और यह गरीबी के लिए सीधा सहसंबंध है। संयुक्त राष्ट्र वित्तीय समावेश के लक्ष्यों रू6, को निम्नानुसार परिभाषित करता हैः सभी परिवारों के लिए बचत या जमा सेवाओं, भुगतान और स्थानांतरण सेवाओं, क्रेडिट और बीमा सहित वित्तीय सेवाओं की पूरी शृंखला के लिए उचित लागत पर पहुंचें। स्पष्ट विनियमन और उद्योग प्रदर्शन मानकों द्वारा शासित ध्वनि और सुरक्षित संस्थान। निवेश की निरंतरता और निश्चितता सुनिश्चित करने के लिए वित्तीय और संस्थागत स्थिरता। ग्राहकों के लिए पसंद और **affordability** सुनिश्चित करने के लिए प्रतियोगिता। संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने 29 दिसंबर 2003 को कहा। ''वास्तविकता यह है कि दुनिया के सबसे गरीब लोगों में अभी भी स्थायी वित्तीय सेवाओं तक पहुंच की कमी है, भले ही यह बचत, क्रेडिट या बीमा हो। बड़ी चुनौती उन बाधाओं को दूर करना है जो लोगों को वित्तीय क्षेत्र में पूर्ण भागीदारी से बाहर कर देते हैं। साथ में, हम समावेशी वित्तीय क्षेत्रों का निर्माण कर सकते हैं जो लोगों को अपने जीवन में सुधार करने में मदद करें। ''हाल ही में, वित्तीय समावेश (एएफआई) के कार्यकारी निदेशक अल्फ्रेड हनीग ने आईएमएफ–विश्व बैंक 2013 स्प्रिंग मीटिंग्स के दौरान वित्तीय समावेशन में 24 अप्रैल 2013 की प्रगति पर प्रकाश डाला। '' वित्तीय समावेशन अब एक फ्रिंज विषय नहीं है। अब इसे देश के नेतृत्व के आधार पर आर्थिक विकास पर मुख्यधारा के विचार के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में पहचाना जाता है। नेशनल बैंक फार एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट के साथ साझेदारी में, संयुक्त राष्ट्र का उद्देश्य उनके लिए एक उचित वित्तीय उत्पाद विकसित करके और वित्तीय साक्षरता को मजबूत करने वाली उपलब्ध वित्तीय सेवाओं पर जागरूकता बढ़ाने, विशेष रूप से महिलाओं के बीच गरीबों को शामिल करना है। संयुक्त राष्ट्र के वित्तीय समावेश कार्यक्रम को संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा वित्त पोषित किया जाता है।

भारत में वित्तीय समावेशन :–

भारत की आजादी के साठ साल बाद भी केवल चालीस प्रतिशत भारतीयों के बैंकों में बचत खाते हैं और 650000 गावों में से सिर्फ ६ प्रतिशत में बैंक शाखाएं हैं। रिजर्व बैंक के तत्वावधान में विभिन्न बैंको द्वारा चलाई जा रही वित्तीय समावेशन योजनाओं के दायरे में आने वाले गाँवों की संख्या मार्च 2013 को समाप्त हुए वित्त वर्ष में 2,68,454 तक जा पहुँची जबकि पिछले वर्ष में यह आँकड़ा 1,81,753 था।रू1, भारतीय रिजर्व बैंक ने इस तरफ कई कदम उठाए हैं जिनमें से कुछ है :–

- भारत में मोबाईल बैंकिंग का विस्तार।
- बैंकिंग कारस्पाण्डेण्ट(बी सी) योजना।
- प्रधानमंत्री जन धन योजना

भारतीय वित्तीय प्रणाली के लक्षण या विशेषताएं (Indian Financial System Characteristics Hindi) :–

- अर्थव्यवस्था की वृद्धि के लिए, वित्तीय प्रणाली देश की अर्थव्यवस्था को विकसित करने में मदद करती हैय यह मेजबान देश की जीवन शैली और जीवन स्तर में सुधार करता है।
- निवेश लाने के लिए, जब वित्तीय संस्थान ठीक से काम करता है, तो यह मेजबान देश में निवेश लाता हैय क्योंकि यह निवेशकों को देश में निवेश करने के लिए विश्वास प्रदान करता है।
- बचत को प्रोत्साहित करने के लिए, जब लोगों ने कमाई शुरू की, तो उन्होंने बचत और निवेश करना शुरू कर दिया।

- धन के आवंटन के लिए, जब बचत और निवेश अर्थव्यवस्था में शुरू होते हैंय यह बैंकों को धन का आवंटन ठीक से करने का अवसर देता है।

निष्कर्ष :–

भारत में मुद्रा बाजार में भारत के भारत और प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड रिजर्व बैंक द्वारा विनियमित है पूंजी बाजार को नियंत्रित करता है। पूंजी बाजार प्राथमिक बाजार और द्वितीयक बाजार के होते हैं। सभी इनीशियल पब्लिक अ०फरिंग प्राथमिक बाजार के तहत आता है और सभी द्वितीयक बाजार लेनदेन द्वितीयक बाजार में सौदों। द्वितीयक बाजार में एक बाजार में जहां प्रतिभूतियों के बाद शुरू में स्टाक एक्सचेंज पर प्राथमिक बाजार में जनता के लिए पेशकश की है और ध या सूचीबद्ध किया जा रहा कारोबार कर रहे हैं करने के लिए संदर्भित करता है। द्वितीयक बाजार इक्विटी बाजार और ऋण बाजार के शामिल हैं। द्वितीयक बाजार लेनदेन बीएसई और एनएसई में पूंजी बाजार के उपकरणों के आदान–प्रदान में एक बड़ी भूमिका निभाता है।

सन्दर्भ गन्थ सूची :–

1. भारतीय रिजर्व बैंक.23 नवम्बर 2010. मूल से 8 मई 2014
2.''Remarks by Smt Shyamala Gopinath RBI at the inauguration of Inter & Bank Mobile Payment Service of the National Payment Corporation of India at Mumbai on November 22-2010
3.http%//rbi-org-in/scripts/PublicationsView-asp
4.www.google.com/wikipedia.com
5.www.wikipedia.com